क्रोध है महारोग
इसका करो न भोग
यह है ऐसी अग्नि
बुद्धि जुलस इसमें जाती
क्रोधी का कोई मित्र नही
बन जाते सब उसके विरोधी
हर पल उसके अंदर आग सुलगती
खुद को भी दूसरों को भी जो तपाती
आत्मा उसकी ख़ाक हो जाती
चैन कभी न स्वयं में वो पाती
उसका न बने कोई संगी साथी
सद गुण भी उससे दूर भागते
ईश्वर की याद न उसे ठहरती
सदबुद्धि को वो तरसती
शांति के लिये आत्मा उसकी तड़पती
सुख सम्पदा उसको छोड़ जाती
निर्बल शक्तिहीन हो आत्मा फिर चिल्लाती
पल पल उससे विकर्म कराती
नींद भी उसका साथ छोड़ जाती
घड़े का पानी भी उस घर में सूख जाता
अग्नि क्रोध की सर्व सम्बन्धो को जलाती
संपर्क कभी उसके मधुर न हो पाते
तन मन सदा उसके रोगयुक्त होते
देह अभिमान से वो निकल न पाते

क्रोधी जीते जीवन श्मशान बराबर
जिंदिगी भी उसको रास न आती
प्रेम की प्यास कभी उसकी बुझ न पाती
शांति प्यार सुख का बन जाता वो भिखारी

क्रोध आत्मा का धर्म नही है
आत्मा का स्वधर्म है शांति
परधर्म में है जो टिकता
दुखी सदा वो ही रहता
रावण राज्य का बनता शिकारी
आत्मा सीता जो उसकी चुराता
आत्मा का स्वधर्म जब भूलता
देह भान में बुरी तरह वो फंसता
भूत की होती तब प्रवेशता
सुख चैन फिर लूट ले जाता
माया रावण राज्य फिर छा जाता
राहू की पड़ जाती पर्छाया
प्रभु राम फिर धरती पर वृहस्पति बन आते
इन भूतों से फिर छुटकारा दिलाते
माया रावण से आत्मा सीता को छुड़ाते
याद की यात्रा सिखलाते
आत्मा में पड़ी खाद को जलाते
देवताओं के गुण सिखलाते
सतयुगी रजायी के लायक बनाते

पावन बना अपने घर ले जाते

ॐ शांति।